

कालिदास

वाजावाभ
त्रिपाठी

(काव्य संग्रह)

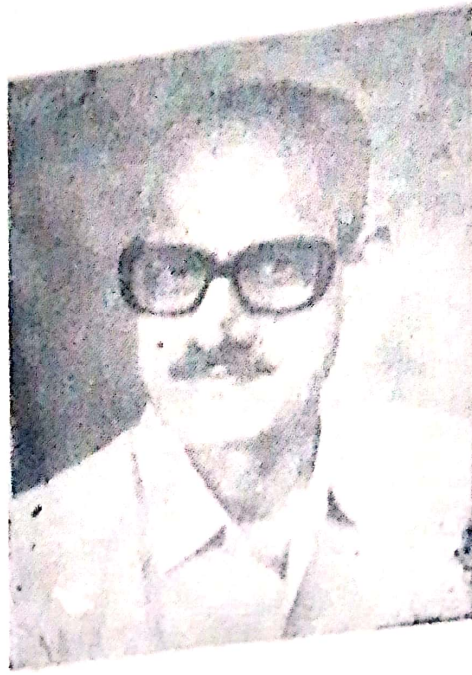


काव्य संग्रह : मेरुदण्ड
रचयिता : राजाराम त्रिपाठी
प्रथम संस्करण : सन् १९८८
आवरण : इम्पेक्ट
प्रकाशक : संतोष प्रकाशन, पन्ना (म० प्र०)
सर्वाधिकार : रमेश रंजन त्रिपाठी, पन्ना (मध्य प्रदेश)
मूल्य : रुपये पच्चीस मात्र
मुद्रक : जय हनुमान प्रिंटिंग प्रेस,
१-सी. बाई का बाग, इलाहाबाद

रचना-क्रम

| क्रम संख्या | शीर्षक | पृष्ठ |
|-------------|------------------------|-------|
| | | ६ |
| १. | एक रेल में दो इंजिन | १२ |
| २. | वर्ना कच्ची लीकों को | १४ |
| ३. | परिपक्व प्रजातंत्र | १५ |
| ४. | पैण्ट के पैबन्द | १६ |
| ५. | युगों से गुलाम | १७ |
| ६. | निर्मम अग्नि परीक्षा | १६ |
| ७. | क्या किसी ने देख पाया | २० |
| ८. | जादू का विकट जाल | २१ |
| ९. | बड़ा ईमानदार | २३ |
| १०. | भटका अथवा हलाल | २५ |
| ११. | बोलते पुर्जे | २७ |
| १२. | प्रगति बरसा रहे हैं वे | २८ |
| १३. | पावक नीचे से मुलगाओ | २९ |
| १४. | घर की खुशहाली पर | ३० |
| १५. | कुर्सी | ३२ |
| १६. | हम सबके मत से मत खेलो | ३३ |
| १७. | मेरा यही लिबास हो गया | ३४ |
| १८. | अपनी तुमसे नहीं पटेगी | ३६ |
| १९. | कायाकल्प | ३८ |
| २०. | ऐसा सत्ताध्यक्ष चाहिए | ४१ |
| २१. | कहाँ तक संभव ? | ४६ |
| २२. | माली मुमन छांटना सीखो | ४८ |
| २३. | सोच समझकर.... | ५२ |
| २४. | चोट मूल पर | ५३ |
| २५. | वर्ना....माखील बनेगा | ५७ |
| २६. | बचकाना बर्दास्त न होगा | |

| | | |
|-----|---------------------------|----|
| २७. | मर कर पुजना जी कर सड़ना | ६० |
| २८. | बंधन ढीले करो | ६३ |
| २९. | तब अखरती है गरीबी | ६५ |
| ३०. | ठीक था यदि.... | ६६ |
| ३१. | गुण का आदर | ६८ |
| ३२. | मुख हाथों में मेल नहीं है | ७२ |
| ३३. | हमारे साथी | ७४ |
| ३४. | पत्थर का दिल | ७७ |
| ३५. | जग में मुझमें वही भेद है | ७९ |
| ३६. | अंतर | ८१ |
| ३७. | विषमता | ८३ |
| ३८. | लौह पथ | ८५ |
| ३९. | यंत्र से परे | ८६ |
| ४०. | जब तक जिऊंगा.... | ८७ |
| ४१. | नोट का विस्फोट | ८८ |



कवि परिचय

नाम : श्री राजाराम त्रिपाठी

पिता : स्व० श्री विन्दे दीन त्रिपाठी

जन्म-तिथि : ७ जून, १९२५ ई०

जन्म-स्थान : फरस्वाह जिला पन्ना

(मध्य प्रदेश)

वर्तमान सम्पर्क : टिकुरिया, अजयगढ़ चौराहा पन्ना
(मध्य प्रदेश)

कुछ और : वांदा (उत्तर प्रदेश) में रह
अध्ययन / फिर अध्यापन के साथ-
साथ स्नातकोपाध्यार्जन / सन्
१९५३ में विन्ध्य प्रदेश कार्य-
पालक सेवा में प्रवेश / सन्
१९६४ में मध्य प्रदेश से डिप्टी
कलेक्टर के पद से सेवा निवृत्ति /
लगभग चालीस वर्षों से हिन्दी
साहित्य की सृजन साधना में
सतत रत ।

